जिस्मानी यात्रा करके थक गए
हुई न आस पूरी नयन गए बरस
बहुत भटके शांति की मिली न फलक
यज्ञ तप मन्त्र तंत्र कर्मकांड किये
सब लगने लगे व्यर्थ लगा न कुछ हाथ
रात दिन उपवास रखे तन को दिए कष्ट
फिरभी न मिला खुदा ईश्वर अल्लाह
कहते रहे मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे में
चिल्ला चिल्ला कर पुकारा गले को दुखा
अब आया है वो धरती पर मिलने को
कर स्वागत बिछा अपने उनकी राह
में नयन किये जो वादे लेकर जो आह
आया है खुद खुदा बताने मैं हूँ तुम्हारा
रूहानी पिता जिस्म तो है रूह का वस्त्र
अपने को जान खुदा को अब पहचान
देह के सब धर्म त्याग मित्र सम्बन्धी
से ममत्व निकाल बुद्धि को रूहानी बाप
में लगा, कर अब रूहानी प्रेम की यात्रा
जिसमें न है कोई भी कष्ट है बहुत सहज
देह भान की आहुति रुद्र शिव यज्ञ में डाल
कंचन काया मिलेगी रुह की मैल अब मिटा
रुह आत्मा को कहते जो खड़ा सोना है
खाद पड़ी इसमें चांदी तांबे लोही की
योग अग्नि से बन जाती फिर 24 कैरेट

खेल हुआ ख़त्म आत्मा को मिला उसका साजन
प्रेम प्यार की ज्योति अब प्रभु मिलन में जगा

ओमशांति!!